

**Dr. Navin Chandra Sharma**  
**Assistant Professor**  
**Dept of psychology**  
**Maharaja Bahadur Ram Ran Vijay Prasad Singh College Ara**

**Date; 18/02/2026**

**Class: P.G Semester - 4th**

**Clinical Psychology,**

**Topic :-**

**परिघटनात्मक मॉडल (Phenomenological model):**

परिघटनात्मक मॉडल इस बात पर बल डालता है कि मानव व्यवहार मुख्य रूप से इस तथ्य द्वारा निर्धारित होता है कि व्यक्ति वातावरण में मौजूद उद्दीपकों का प्रत्यक्षण किस प्रकार करता है। यह उपागम तब स्वयावतः मूल प्रवृत्ति (Instinct) अन्तरामानसिक संघर्ष (intrapsychic conflict), पर्यावरणीय एवं संज्ञानात्मक कारकों को व्यवहार की उत्पत्ति, संपोषण एवं परिमार्जन का कारण नहीं मानता है। परिघटनात्मक मॉडल में इस बात पर बल डाला जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति द्वारा वातावरण का प्रत्यक्षण अपने ढंग से किया जाता है और प्रत्येक के व्यवहार में प्रत्यक्षण के उस ढंग का स्पष्ट झलक मिलता है।

परिघटनात्मक मॉडल की उत्पत्ति के कई स्रोत हैं जिनमें फैली का पैगाकृत संरचना सिद्धान्त (personal construct Theory), रोजर्स का आरम्भशिक्षा सिद्धान्त (Rogers self actualization Theory), मैसलो का मानवतावादी सिद्धान्त (Maslow Humanistic Theory), तथा फ्रिज पल्स (Fritz Perls) का गेस्टाल्टवादी उपागम प्रधान है।

परिघटनात्मक मॉडल के विभिन्न सभोंतो की व्याख्या के पूर्व इसकी प्रमुख विशेषाओं का उल्लेख निम्न रूप से किया जा सकता है-

(i) मानव एक सक्रिय चिन्तनशील प्राणी है जो वैयक्तिक रूप से अपने द्वारा किये गये कार्यों के लिए, जबावदेह होता है तथा अपने व्यवहार के बारे में सचेत होकर कोई निर्णय लेता है। मानव को मानसिक संरचनाओं (mental structures) एवं आवेगों को वाहक या पुनर्बलन (reinforcement) का माम प्राप्तिकर्ता के रूप में समझना एक मूल होगी।

(ii) इस मॉडल की एक प्रमुख विशेषता इस बात पर बल डालता है कि कोई भी व्यक्ति के व्यवहार को तभी समझ सकता है जब उसमें उस दूसरे व्यक्ति की आँखों से वातावरण को देखने की क्षमता है। अर्थात् मानव व्यवहार तभी समझने योग्य होता है जब उसे उस व्यक्ति की नजर से दखा जाय जिसका प्रेक्षण किया जा रहा है।

परिघटनात्मक मॉडल के प्रमुख स्रोतों में से निम्नांकित प्रमुख स्रोत हैं-

(1) केली का वैयक्तिक संरचना विचारधारा (Kelly's personal construct viewpoints): केली का सिद्धान्त इस मौलिक पूर्वधारणा पर आधारित है कि मानव व्यवहार का निर्धारण वैयक्तिक संरचना (Personal construct) से होता है। वैयक्तिक संरचना से तात्पर्य एक ऐसे साधन (means) से होता है जिसके सहारे लोग वातावरण की घटनाओं की व्याख्या करते हैं तथा उसे समझने की कोशिश करते हैं। केली के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति अपने द्वारा किये जाने वाले व्यवहार के परिणाम को ध्यान में रख कर उसे पूरा करता है। इस विन्दु पर केली का विचार रौंटर

के सामाजिक-सीखना उपागम के विचार के समान है। वैयक्तिक संरचनाओं को वैदधीकरण पर केली ने बहुत बल डाला है। प्रत्येक व्यक्ति अपने वैयक्तिक संरचनाओं को वैदध करना चाहता है क्योंकि तभी वह वातावरण के प्रत्यक्षण को अर्थपूर्ण बना सकता है। वैयक्तिक संरचना के वैदधीकरण को एक उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है- यदि कोई व्यक्ति तेज चाकू के प्रति सर्तकापूर्ण व्यवहार करना चाहेगा। इस तरह के व्यवहार द्वारा लापरवाही के परिणाम के बारे में वह सही अनुमान लगा पाता है या उसकी व्याख्या कर पाता है तथा किसी तरह के संभावित दुर्घटना (Accident) से अपने आप को वह बचा भी पाता है। इस तरह से यह संरचना कि "तेज चाकू खतरनाक होता है" वैधीकृत (Validated) हुआ ।

केली के सिद्धान्त के अनुसार जब कुछ कारण से व्यक्ति अपनी सामाजिक अनुभूतियों के बारे में गलत, अतिसरलीकृत (oversimplifies) एवं दोषपूर्ण संरचना विकसित कर लेता है तो उसका व्यवहार समस्यात्मक हो जाता है। अगर किसी व्यक्ति में वैयक्तिक संरचना की संख्या कम है और वह इन्हीं कुछ सीमित संरचनाओं के आधार पर दिन प्रतिदिन की घटनाओं को समझना चाहता है तथा उसकं परिणाम के बारे में अनुमान लगाना चाहता है तो ऐसी परिस्थिति में भी वह उपयुक्त व्यवहार (appropriate behaviour) नहीं कर पायगा। केली का यह भी मत है कि व्यक्ति में अपने वैयक्तिक संरचना को परिवर्तित करना सीखने की भी क्षमता होती है और इस तरह से उससे प्रवाहित होने वाले अनुक्रिया का पैटर्न में भी परिवर्तन ला सकता है। केली के इस विचार से परिघटनात्मक संप्रत्ययों में एक नया मोड़ आया जिससे परिघटनात्मक मॉडल के स्वरूप में स्पष्ट निखार आया है।

(2) रोजर्स का आत्म-सिद्धि उपागम (Rogers, 1951, 1970) के विचार को इस मॉडल का मानवता वादी रूपांतर माना गया है, के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में वृद्धि एवं वर्द्धन (growth)की और बढ़ने की एक जन्मजात प्रवृत्ति या अभिप्रेरणा होती है। इसी अभिप्रेरणा से मानव के सभी तरह के व्यवहार प्रेरित होते हैं। इस अभिप्रेरण को आपत्तिद्धि (Self Actualization) कहा जाता है। इस तरह का प्रयास व्यक्ति में जन्म के ही समय से होता पाया जाता है और पूरी जिन्दगी चालते रहता है। ऐसे प्रयास कभी सफल होते हैं तो कफी उनकी सफलता के मार्ग में रूकावट भी आ जाती है।

रोजयं का मत है कि प्राणी सभी तरह के अनुभूतियों का केन्द्र होता है। सभी तरह को चेतन एवं अचेतन अनुभूतियों के योग से जिस रोग का निर्माण होता है उसे प्रासंगिक सेम (Phenomenal field) कहा जाता है। मानव व्यवहार इसी प्रासंगिक सेम के कारण होता है न कि किसी बाह्य उद्दीपन के कारण जैसा कि स्कीनर ने कहा था। प्रासंगिक सेम की विशेषता यह होती है कि इसके बारे में व्यक्ति स्वयं सही-सही जानता है, कोई दूसरा व्यक्ति इसके बारे में नहीं जानता। धीरे-धीरे अनुभव के आध र पर प्रासंगिक सेम का एक भाग अधिक भिन्न एवं विशिष्ट हो जाता है जिसे रोजर्स पे आत्मन (Self) कहा है। रोजर्स के अनुसार आत्मन का विकास शैरावास्था में होता है जब शिशु की अनुभूतियों का एक अंश या भाग अधिक मूर्त रूप प्राप्त करने लगता है और 'मैं' या 'मुझको' के रूप में धीरे-धीरे अपनी पहचान से अवगत होने लगता है तथा उसे अच्छे बुरे का ज्ञान होने लगता है।

रोजर्स के अनुसार आत्मन (Self) के दो जपतंभ (Sub system) होते हैं-आत्मसंप्रत्यय (Selfconcept) तथा आदर्श आपन (ideal self) । आत्म संप्रत्यय से तात्पर्य व्यक्ति के उन सभी पहलुओं एवं अनुभूतियों से होता है जिनसे व्यक्ति उत्पन्न होता है। आदर्श आत्मन से तात्पर्य अपने बारे में विकसित किये गये एक ऐसे छवि या धारणा से होता है जिसे यह आदर्श मानता है। दूसरे शब्दों में अदर्श आत्मन में वे सभी गुण होते हैं जो प्रायः घनात्मक होते हैं तथा जिसे व्यक्ति अपने में विकसित होने की तमन्ना करता है। एक सामान्य व्यक्ति में आदर्श आत्मन् (ideal self) तथा प्रत्यासित आत्मन् (perceived self) में अंतर है तो इससे एक अस्वस्थकर व्यक्तित्व (unhealthy personality) दोनों का अंदाज मिलता है।

राजर्स के अनुसार व्यक्ति का सबसे प्रमुख अभिप्रेरण आत्मशिद्धि अभिप्रेरण (Self actualization motive) होता है। इस तरह के अभिप्रेरण द्वारा दो तरह की आवश्यकताओं की उत्पत्ति है-स्वीकारात्मक सम्मान की आवश्यकता

(need for positive regard) तथा आरम्भ सम्मान (Self regard) की आवश्यकता। स्वीकारात्मक सम्मान से तात्पर्य दूसरों द्वारा स्वीकार किये जाने दूसरों का स्नेह पाने एवं उनके द्वारा पसंद किये जाने की इच्छा से है। आत्म सम्मान से तात्पर्य इस बात से होता है कि व्यक्ति में अपने आप को सम्मान एवं स्नेह देने की आवश्यकता होती है। यह आवश्यकता भी अर्जित होती है तथा व्यक्ति में संतोषजनक आत्म अनुभूतियों से उत्पन्न होती है। दूसरे शब्दों में जब व्यक्ति को महत्वपूर्ण व्यक्तियों से सम्मान मिलता है, तो इससे उसमें घनात्मक आत्म सम्मान (positive Self regard) की भावना या प्रेरणा उत्पन्न होती है।

रॉजर्स के अनुसार यदि व्यक्ति की अनुभूतियों एवं आत्म संप्रत्यय (Selfconcept) में संगति (Consistency) होती है तो इससे एक स्वस्थ वयक्तित्व का विकास होता है। तथा उसमें सामान्य सामाजिक व्यवहार की प्रचुरता होती है। इस तरह के स्वरूप व्यक्तित्व को रॉजर्स ने पूर्णरूपेण सफल व्यक्ति (full functioning person) कहा जाता है। दूसरी ओर यदि व्यक्ति को अनुभूतियों एवं आत्मक संप्रत्यय में असंगति होती है या अंतर होता है तो इससे चिन्ता उत्पन्न होती है और व्यक्ति के व्यवहार में असामान्यता विकसित हो जाती है। इस तरह की चिन्ता से अपने आपको बचाने के लिए व्यक्ति वास्तविकता को विकृत (distort) करते हैं या फिर उसे खंडित (diny) भी करता है। इस तरह विकृति एवं खंडन जैसे प्रतिरसात्मक उपाय के सहारे व्यक्ति अपने आत्मन (Self) को चिन्ता से बचा पाता है।

(3) मैसलो एवं मानवतावादी मनोविज्ञान (Maslow and Humanistic Psychology): मैसलो ने अपने मानवताचारी विचारधारा में प्रत्येक व्यक्ति के आत्मनिष्ठ अनुभूतियों (Subjective experiences) तथा वावरण का उनके द्वारा किया गया अपूर्व प्रत्यक्षण (unique perception) को काफी महत्वपूर्ण माना है और कहा है कि मानव व्यवहार का निर्धारण इन्हीं दो कारकों द्वारा होता है। इस तरह मैसलो के मानवतावादी दृष्टिकोण में मानव के घनात्मक एवं सर्जनात्मक पहलू पर अधिक बल डाला गया है। रॉजर्स के समान मैसलो भी यह मानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति में आत्मशिद्धि जैसी अभिप्रेरणात्मक प्रवृत्ति (motivational tendency) पायी जाती है। परंतु ये रॉजर्स के समान यह मानने को तैयार नहीं हैं कि आत्म अनुभूति (Self experience) तथा जीवात्मक अनुभूति (organismic self) के बीच असंगतता (incongruity) उत्पन्न होने से व्यक्ति अपने भीतर छिपे अन्तः शक्ति (Potential) की न तो पहचान कर पाता है और न ही उसके अनुरूप कोई व्यवहार कर पाता है। मैसलो के अनुसार इसका कारण व्यक्ति में असंतुष्ट आवश्यकताओं की उपस्थिति है।

मैसलो के अनुसार मानव आवश्यकताएँ एक पदानुक्रम (hierarchy) में संसृजित होते हैं। ऐसी आवश्यकताएँ पाँच हैं जिनमें प्राथमिकता (priority) या शक्ति (Potency) के आरोही पदानुक्रम में इस प्रकार रखा गया है-शारीरिक आवश्यकता, सुरक्षा की आवश्यकता, संवद्धता एवं स्नेह की आवश्यकता, सम्मान की आवश्यकता (esteem need) तथा आत्मशिद्धि की आवश्यकता (Self Actualization need)। इनमें से प्रथम दो आवश्यकताएँ-शारीरिक आवश्यकता तथा सुरक्षा की आवश्यकता को निचले स्तर की आवश्यकता (lower level need) तथा अंतिम तीन आवश्यकताओं अर्थात् संवद्धता एवं स्नेह की आवश्यकता, सम्मान की आवश्यकता तथा आत्मशिद्धि की आवश्यकता को उच्चस्तरीय आवश्यकता (higher level need) कहा जाता है मैसलो के इस आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धान्त की विशेषता यह है कि एक स्तर की आवश्यकता की पूर्णता के लिए यह आवश्यक है कि उसके निचले स्तर की आवश्यकताओं को पूर्ण रूपेण हो। यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति में सम्पूर्णशिद्धि (full actualization) का अन्तः शक्ति (Potential) मौजूद होता है फिर भी व्यक्ति इस स्तर पर तबतक नहीं पहुँच सकता है जबतक कि उसके निचले स्तर की आवश्यकताओं की पूर्णता न हो जाय।

उर्पयुक्त पाँच आवश्यकताओं के अलावा मैसलो ने अन्य दो प्रमुख आवश्यकताओं न्यूनता अभिप्रेरक (deficiency motivation) तथा वर्द्धन अभिप्रेरक (growth motivation) का वर्णन किया है जो परिघटनात्मक उपगम में अति महत्वपूर्ण वतलाया गया है। न्यूनता अभिप्रेरक को डी भूमिप्रेरक (Demotivation) भी कहा जाता है। इस तरह के अभिप्रेरक का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति में न्यून या हीन अवस्थाओं से उत्पन्न तनाव को दूर करने के लिए प्रेरित करना होता है। आत्मशिद्धि व्यक्तियों में डॉ अभिप्रेरक बहुत महत्वपूर्ण नहीं होता है परंतु जो लोग

आत्मशिद्ध नहीं होते हैं, उनका व्यवहार डी अभिप्रेरक से अधिक नियमित एवं निर्देशित होता है। वर्धन आवश्यकता (growth motivation) से तात्पर्य वैसे अभिप्रेरक से होता है जो व्यक्ति को अपनी अन्तः शक्ति की पहचान करके उसे विकसित करने के लिए प्रेरित करता है इसे मैसलो ने मेटा-आवश्यकता (metaneed) या सत्व अभिप्रेरक (Being or B-motive) भी कहा है। इस तरह की आवश्यकता या अभिप्रेरक आत्मशिद्ध व्यक्तियों का मुख्य अभिप्रेरक होता है। मेटा आवश्यकता का स्वरूप चूंकि सहजिक (instinctive) होता है, अतः मानसिक स्वास्थ्य बनाये रखने के लिए तथा अधिकतम वर्द्धन विकास के लिए ऐसे अभिप्रेरकों की संतुष्टि अनिवार्य है।

(4) फ्रिज पर्ल्स एवं गेस्टाल्ट मनोविज्ञान (Fritz Perls and gestalt Psychology): एक यूरोपीय मनोरोगविज्ञानी (Psychiatrist) पर्ल्स फ्रायड की व्याख्या से असंतुष्ट होकर स्पष्ट रूप से कहा कि फ्रायड द्वारा यौन (Sex) पर जरूरत से ज्यादा बल डाला गया तथा भूख (hunger) अभिप्रेरक पर कुछ भी बल नहीं डाला गया। भूख को उन्होंने आत्मसिद्धि (Self Actualization) तथा आत्म संरक्षण (self preservation) के लिए एक मानसिक संरचना (Psychic Structure) न कहकर एक प्रक्रिया (Process) के रूप में वर्णन किया है जिसका लक्ष्य व्यक्ति की आवश्यकताओं तथा वातावरण की माँगों के बीच अपने तनाव को कम करना है तथा दोनों में एक संतुलन बनाये रखना है। जैसे जैसे संतुलन बनाये रखने का कार्य चलते रहता है व्यक्ति का वर्द्धन भी मनोवैज्ञानिक रूप से होते रहता है। व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति की नयी प्रविधियों का पता लगाता है तथा पर्यावरणकी माँग के साथ अपने आप को समायोजित करने के लिए वह अपने आप को अधिक सक्षम भी पाता है। इस तरह का विकास व्यक्ति में अनवरत होता रहे, इसके लिए आवश्यक है कि व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं तथा वाह्य वातावरण की माँगों पूर्णतः अवगत रहे। जब व्यक्ति के विकास के मार्ग में बाधा पहुँचती अवगत रहे। जब व्यक्ति के विकास के मार्ग में बाधा पहुँचती है, तो वर्द्धन रुक जाता है तथा समस्यात्मक व्यवहार उत्पन्न होने लगता है। उन्होंने स्पष्ट कहा है कि मनोस्नायुविकृति (Psychoneurosis) मनोवैज्ञानिक वर्द्धन (Psychological growth) के लिए एक तरह का प्रगतिरोध (stagnation) है। ऐसी अवस्था में आरम्भसिद्धि को प्राप्त करने का व्यक्ति का प्रयास व्यक्ति की आवश्यकताओं एवं समाज की माँगों के बीच संघर्ष होने से अवरूद्ध हो जाता है। इस तरह के समस्यात्मक व्यवहार की चिकित्सा के लिए पर्ल्सनेजिस चिकित्सा पद्धति का वर्णन किया है उसे गेस्टाल्ट चिकित्सा कहा जाता है जिसका उद्देश्य आवश्यकताओं एवं समाज की माँगों के प्रति सचेतता बढ़ाकर वर्द्धन की प्रक्रिया को पुनः प्रारंभ करना होता है।

परिघटनात्मक मॉडल के उर्पयुक्त चारो प्रमुख विचारधाराओं का निष्कर्ष यह है कि जब मानव अपनी विशाल अन्तःशक्ति (Potential) को विकसित करने में इसलिए असफल रहता है क्योंकि व्यक्ति के वैयक्तिक वर्द्धन तथा स्वास्थ्य के प्रति जो स्वभाविक प्रवृत्तियाँ हैं, वे किसी कारण से अवरूद्ध हो जाती हैं तथा उसमें असामान्यता उत्पन्न हो जाता है। इस मॉड के अनुसार चिकित्सा में व्यक्ति के कुसमायोजन से समायोजन की ओर ले जाने का एक रास्ता नहीं समझा जाता है बल्कि उसे सामाजिक रूप से सर्जनात्मक एवं वैयक्तिक रूप से संतोषजनक जिन्दगी जीने की राह दिखाने का एक माध्यक समझा जाता है।